

डॉ. अयो अदेवुया , 2 कुरिन्थियों, सत्र 8, 2 कुरिन्थियों 7, तत्काल अपील

© 2024 आयो एडेवुया और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. अयो अदेवुया द्वारा 2 कुरिन्थियों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 8, 2 कुरिन्थियों 7, तत्काल अपील है।

हम 2 कुरिन्थियों 7 को देखना शुरू कर रहे हैं। पिछले सत्र में, हमने 2 कुरिन्थियों 6 के साथ समाप्त किया था, और हमने 6.14 को देखा था, लेकिन वास्तव में, वह अंश, वह विषयांतर, 7:1 तक चलता है। इसलिए, नया खंड 7:2 से शुरू हुआ होगा। तो, आइए जल्दी से 7:1 के बारे में बात करें, जहाँ पॉल इन महान वादों के बारे में बात करता है: हमें खुद को सभी अशुद्धता और प्रदूषण से शुद्ध करने की आवश्यकता है, परमेश्वर के भय में पवित्रता को पूर्ण करना है।

प्रियों, चूँकि हमारे पास ये वादे हैं, तो आइए हम अपने शरीर और आत्मा की हर मलिनता से खुद को शुद्ध करें, और परमेश्वर के भय में पवित्रता को सिद्ध करें। आप देखिए, यह आयत 6:14 में शुरू होने वाले विषयांतर को समाप्त करती है। इसलिए पौलुस विषयांतर को समाप्त करता है। इसलिए, वह कहता है, इसलिए, दुर्भाग्य से, इसलिए NIV में छोड़ दिया गया है, लेकिन इसे वहाँ होना चाहिए।

पॉल ने सभी पूर्ववर्ती अपीलों का सारांश दिया। उसने कहा कि इन महान वादों के आधार पर, वादे क्या हैं? जहाँ परमेश्वर कहता है, तुम मेरे बेटे होगे, मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊंगा, और तुम मेरे बेटे होगे, और तुम मेरी बेटियाँ भी होगे। और मैं तुम्हारा पिता होऊंगा, और तुम मेरे बेटे और बेटियाँ होगे, सर्वशक्तिमान प्रभु कहते हैं।

उसने कहा, मैं तुम्हारा स्वागत करूँगा। इसलिए, पौलुस कहता है, इन वादों को देखते हुए, हमें उस तरीके से चलने की ज़रूरत है जो हमारी बुलाहट के अनुकूल हो। इसलिए, वह उन्हें प्रिय मित्र कहता है, और यह काफी दिलचस्प है।

अब, उन लोगों के बारे में सोचें जो उसका विरोध करते हैं, और पौलुस उन्हें प्रिय मित्र कहता है। यूनानी में इसका अर्थ है अगापेटोई, प्रिय, जो कि पौलुस द्वारा अक्सर उन लोगों के लिए इस्तेमाल किया जाता है जिनके साथ उसका घनिष्ठ और अनुकूल संबंध है। और फिर भी पौलुस इन लोगों को प्रिय मित्र, प्रिय कहता है।

आप देखिए, पौलुस 6:14 और 7:1 में अपने आरंभिक और अंतिम उपदेशों का समर्थन शास्त्रों के विभिन्न अंशों से बहुत ही शिथिल रूप से निर्मित तर्कों के साथ करता है। लेकिन अब वह नैतिक जीवन जीने का आह्वान करता है, और कहता है, आइए हम खुद को शुद्ध करें। ऐसे उपदेश आदेशों की तुलना में कम सशक्त हैं, लेकिन यह कुछ ऐसा है जो हमें अभी भी करने की आवश्यकता है।

वे श्रोताओं को साझा अपेक्षा को आगे बढ़ाने में लेखक के साथ शामिल होने के लिए आमंत्रित करते हैं। उन्होंने कहा शुद्ध करना। यह बहुत दिलचस्प है कि यहाँ शुद्ध करना या साफ करना शब्द आमतौर पर पूजा की सेटिंग में उत्पन्न हुआ है जिसे हम पंथिक सेटिंग कहते हैं।

उदाहरण के लिए, सुसमाचारों में इसका प्रयोग कुष्ठ रोग के उपचार के लिए किया जाता है, जब यह शुद्धिकरण के बारे में बात करता है। लेकिन यहाँ, इसका दायरा नैतिक शुद्धिकरण को शामिल करने के लिए बढ़ाया गया है, और वह कहता है, आइए हम अपने आप को शरीर और आत्मा की हर गंदगी से शुद्ध करें। यहाँ ग्रीक में अशुद्धता के लिए इस्तेमाल किया गया शब्द, मोलसमौ, केवल यहाँ नए नियम में इस्तेमाल किया गया है।

इसका प्रयोग नए नियम में केवल एक बार किया गया है, और यह नैतिक और आध्यात्मिक संदूषण को संदर्भित करता है जो मूर्तिपूजक प्रथाओं में भागीदारी के परिणामस्वरूप होता है। और पौलुस शरीर और आत्मा की हर अशुद्धता को व्यक्त करने के लिए मांस और आत्मा का उपयोग करता है। पौलुस यह बयान दे रहा है कि हमारे जीवन का कोई भी पहलू ऐसा नहीं है जिसे रक्त, मांस और आत्मा की शुद्ध करने वाली शक्ति से छुआ न जाए, जिसे हम पूरे व्यक्ति के लिए परिच्छेद कहते हैं।

दूसरे शब्दों में, आप कह सकते हैं कि जबकि मेरा दिल और आत्मा भगवान के हैं, मैं अपने शरीर के साथ जो चाहूँ कर सकता हूँ। रोमियों के अध्याय 12 में, वह बिल्कुल यही बात कहता है: तुम अपने शरीर को जीवित बलिदान के रूप में भगवान को अर्पित करते हो, केवल एक स्वीकार्य बलिदान, जो तुम्हारी उचित सेवा है, और दुनिया के अनुरूप नहीं है। आप देखिए, पॉल यहाँ नैतिक सिद्धांतों का विरोध करने के लिए मांस और आत्मा का उपयोग नहीं कर रहा है, नहीं।

इसके बजाय, वह यहाँ शरीर और आत्मा का उपयोग एक लोकप्रिय तरीके से पूरे व्यक्ति को समझने के लिए करता है, जिसे शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से देखा जाता है। पॉल एक संपूर्ण नैतिक सफाई के लिए कहता है जो कुरिन्थियों के पूरे अस्तित्व, हमारे सभी जीवन को प्रभावित करेगी। हमारे रविवार के स्कूलों में, हम बच्चों के साथ गाते हैं, मेरा सिर, मेरे कंधे, मेरे घुटने, मेरे पैर की उंगलियाँ, मेरा सिर, मेरे कंधे, मेरे घुटने, मेरे पैर की उंगलियाँ; वे सभी यीशु के हैं।

पॉल यहाँ बिल्कुल यही कह रहा है। हमारे हर अंग को शुद्ध किया जाना चाहिए। मुझे जॉन वेस्ले का यह कहना पसंद है; वह पवित्रीकरण को हमारे जीवन के हर पहलू में बाहरी और आंतरिक पाप से शुद्धिकरण कहते हैं।

अब, आप सोच रहे होंगे कि क्या इस तरह की पवित्रता संभव है? मैं बस एक बयान देना चाहता हूँ। परमेश्वर अपने शब्दों में जो भी आज्ञा देता है, उसकी आत्मा उसे संभव बनाती है। अगर परमेश्वर हमें कुछ करने की आज्ञा देता है, तो आप निश्चित हो सकते हैं कि वह हमें वह काम करने के लिए सशक्त करेगा।

ईश्वर फिरौन की तरह नहीं है, जो इस्राएल के बच्चों से कहता था कि जाओ और ईंटों को काट दो, लेकिन उन्हें एक तिनका भी नहीं देता। इसलिए, हमें जो कुछ भी चाहिए, वह हमें वह बनने के

लिए चाहिए जो ईश्वर चाहता है, वह हमें वह बनने के लिए चाहिए जो ईश्वर चाहता है, और वह करने के लिए जो ईश्वर चाहता है कि हम करें, वह सब हमें दिया गया है। मेरा मतलब है, उसने हमें वचन दिया है, उसने हमें आत्मा दी है, उसने हमें लहू दिया है, उसने हमें सब कुछ दिया है।

तो, कहीं आप यह न सोच रहे हों कि क्या यह संभव है? क्या यह कोई आकाश में पाई है? यह कोई आकाश में पाई नहीं है। वह कहते हैं कि हम अपना काम करते हैं। आइए हम खुद को शुद्ध करें।

हम खुद को शुद्ध करते हैं, हम अपना काम करते हैं, और हम परमेश्वर को अपना काम करने देते हैं। और वह कहता है, आइए हम परमेश्वर के भय में पवित्रता को पूर्ण करें। यानी, योजना या उद्देश्य के अनुसार परिणाम लाना।

हमें यही करना चाहिए। देखिए, पॉल के लिए, पवित्रता को पूर्ण करना ही ईसाई जीवन का उद्देश्य है। मुझे महान उपदेशक एडम क्लार्क का यह कथन पसंद है, जब वे कहते हैं, मसीह के पूरे मन को आत्मा में लाना।

यह एक सच्चे ईसाई प्रयास का महान उद्देश्य है। अर्थात्, मसीह के पूरे मन को आत्मा में लाना। और वह कहता है, परमेश्वर के भय में पवित्रता को पूर्ण करना।

यह बहुत महत्वपूर्ण है। अब हम वहाँ से आगे बढ़ते हैं, और हम अध्याय 7 में जाते हैं, पद 2 से शुरू करते हैं, जहाँ पौलुस संगति के लिए अपनी अपील को नवीनीकृत करता है। अपील का नवीनीकरण है।

तो, ये ज़रूरी अपीलें हैं। आप देखिए, लिखते समय, कुरिन्थियों को पौलुस पर भरोसा नहीं था और वे सीधे उससे चोरी कर रहे थे, जिसने उन्हें सुसमाचार की घोषणा के ज़रिए मसीह के पास लाया था। इसलिए, पौलुस अभी भी उनका भरोसा बहाल करने की पूरी कोशिश कर रहा था, यह अच्छी तरह जानते हुए कि उसके व्यक्तित्व में आत्मविश्वास की कमी का नतीजा उसके संदेश में आत्मविश्वास की कमी होगी।

आखिरकार, कोई भी संदेश केवल संदेशवाहक जितना ही विश्वसनीय होता है। कोई भी संदेश केवल संदेशवाहक जितना ही विश्वसनीय होता है। मेरा मतलब है, अगर कोई कहता है, चोरी मत करो, और आप उसे चोर के रूप में जानते हैं, तो आप कहते हैं, ठीक है, इसे भूल जाओ।

और आप कहते हैं, अच्छा, वह हमें क्या बता रहा है? हम यह जानते हैं। मुझे याद है, कुछ साल पहले, कोई उपदेश दे रहा था, और वह इस बारे में बात कर रहा था कि हमें कैसे उपवास करना चाहिए, यह करना चाहिए, और पवित्रता रखनी चाहिए। और फिर भी, यह व्यक्ति जो उपवास के बारे में इतना बात कर रहा था, आप उसे देखिए। उसका पेट उसकी अपनी बेल्ट को ढक रहा था।

और फिर भी वह सभी को उपवास करने के लिए कह रहा है। मैं बस इतना कहना चाह रहा हूँ कि पॉल उनके बीच सामंजस्य बिठाने की कोशिश कर रहा था क्योंकि वह जानता था कि अगर वे

एक व्यक्ति के रूप में उस पर संदेह करते हैं तो उनके साथ सामंजस्य न होने का खतरा है। निश्चित रूप से, यह उसके द्वारा प्रचारित संदेश को प्रभावित करेगा।

इसमें, पॉल सुलह के एक एजेंट के रूप में कार्य करना जारी रखता है। अब, एक मिनट के लिए इस बारे में सोचें। पॉल पहल करता है, जो वास्तव में प्रेम करता है।

कभी-कभी, हम किसी और के आने का इंतज़ार करते हैं और हमें बताते हैं कि उसे खेद है या वह हमारे साथ सुलह कर ले। लेकिन पौलुस के मन में कुरिन्थियों के लिए इतना प्यार था कि वह उकसावे को बर्दाश्त नहीं कर सका, और उसने पहल की। और आज, हम जानते हैं कि ऐसी कई चीज़ें हैं जो हमारे बीच और हमारे विश्वासियों के बीच दरार पैदा करती हैं, लेकिन चर्च को सुलह का समुदाय बने रहना चाहिए।

संतों का एक ऐसा समुदाय जो आपसी प्रेम और साझा विश्वास की विशेषता रखता हो। चर्च को ऐसा ही होना चाहिए। यह बहुत दुखद है कि आप एक संप्रदाय के भीतर एक ही संप्रदाय पा सकते हैं, और आप उस संप्रदाय में एक दूसरे से एक सड़क नीचे दो या तीन चर्च पाते हैं, और उनका एक दूसरे से कोई लेना-देना नहीं है।

और फिर भी, वे एक ही संप्रदाय से हैं। एक दूसरे से सिर्फ एक ब्लॉक की दूरी पर। पादरियों का एक दूसरे से कोई लेना-देना नहीं है।

सदस्यों का एक दूसरे से कोई लेना देना नहीं है। वे एक दूसरे को संदेह की दृष्टि से देखते हैं। वे एक साथ संयुक्त बैठक नहीं कर सकते।

क्यों? क्योंकि उन्हें डर है कि हमारे सदस्य उस दूसरे चर्च में चले जाएंगे, और वे हमारे पास वापस नहीं आएंगे। हमें संतों का एक ऐसा समुदाय होना चाहिए जो आपसी प्रेम और साझा विश्वास की विशेषता रखता हो। अब, वह अध्याय 7 में श्लोक 2 से 4 तक बात करता है। वह नए सिरे से आपसी विश्वास के अपने आह्वान पर लौटता है, जिसकी शुरुआत उसने अध्याय 6:11 से 13 में की थी।

उसने कहा, अपने दिलों में हमारे लिए जगह बनाओ। अपने दिलों में हमारे लिए जगह बनाओ। तो, जो आप 6, 11 से 13 में पाते हैं, वही 7:2 से 4 में दोहराया गया है। पौलुस 6:13 में अपनी दलील दोहराता है।

6:13 में, उसने पहले ही कहा था, अपने दिलों को भी खोलो। और अब वह अध्याय 7, श्लोक 2 में इस पर वापस आता है। साथ में, ये श्लोक नए नियम में किसी भी समानता के बिना एक स्नेही अपील का निर्माण करते हैं। यह एक स्नेही अपील है।

अपने दिलों में हमारे लिए जगह बनाओ। अब, याद रखें कि हमने इस श्रृंखला के अध्ययन की शुरुआत में कहा था कि यह पुस्तक पॉल के दिल में एक द्वार है। यह पॉल के दिल में एक खिड़की है।

हमने यही कहा। आप इसे यहाँ देख सकते हैं। 7:2 से 4 का क्या मतलब है, इसका वास्तव में क्या मतलब है? आइए इसे पूरा पढ़ें।

अपने दिलों में हमारे लिए जगह बनाओ। हमने किसी के साथ अन्याय नहीं किया। हमने किसी को भ्रष्ट नहीं किया।

हमने किसी का फ़ायदा नहीं उठाया है। मैं यह सब आपकी निंदा करने के लिए नहीं कह रहा हूँ। क्योंकि मैंने पहले ही कहा था कि आप हमारे दिलों में हैं।

साथ मरना और साथ जीना। मैं अक्सर तुम्हारे बारे में शेखी बघारता हूँ। मुझे तुम पर बहुत गर्व है।

मैं सांत्वना से भर गया हूँ। हमारे सारे दुखों के बावजूद मैं बहुत खुश हूँ क्योंकि उसने हमें तुम्हारी लालसा और तुम्हारे शोक के बारे में बताया।

मेरे लिए तुम्हारा उत्साह इतना है कि मैं और भी अधिक जुड़ गया। आप देखिए, 7: 2 से 4 का क्या मतलब है, यह स्पष्ट हो जाता है क्योंकि पॉल कुरिन्थियों के साथ अपने मेल-मिलाप को पूरा करना चाहता है। ऐसा लगता है कि वह अपने आचरण के बारे में उनके मन में उठने वाले सवालों को पहचानता है क्योंकि वह तीन गुना बयान के साथ जोर देता है कि उसने कुरिन्थ में किसी के साथ बुरा व्यवहार नहीं किया।

इससे हमें पता चलता है कि पॉल को पता था कि अभी भी कुछ आशंकाएँ थीं। यह अंश महत्वपूर्ण है। यह पीछे और आगे दोनों तरफ़ देखता है।

2 कुरिन्थियों 7:2 से 4 में पौलुस के लंबे समय तक चले उस विषयांतर का समापन किया गया है जो 2:14 से शुरू हुआ था, और अब यह मकिदुनिया में तीतुस के साथ उसकी मुलाकात का विवरण फिर से शुरू करता है, जो 2:12 से 2:13 में शुरू हुआ था। इसलिए अपील के अनुसार, अपने दिलों में हमारे लिए जगह बनाओ। अधिकांश अनुवाद आपके दिलों में शब्द जोड़ते हैं ताकि यह स्पष्ट हो सके कि पौलुस 6.11 में जहाँ से बोला था, वहीं से बोल रहा है। हमारा दिल पूरी तरह से खुला है जैसा कि न्यू रिवाइज्ड स्टैंडर्ड वर्जन में अनुवाद किया गया है। अगर सुलह होनी है तो कुरिन्थियों को भी जवाब देना चाहिए।

आप देखिए, सच्ची संगति के लिए साझा करना और पारस्परिकता की आवश्यकता होती है। दो लोगों के बीच, दो कलीसियाओं के बीच और दो निकायों के बीच संगति के लिए, साझा करना और पारस्परिकता की आवश्यकता होती है। और पौलुस इस प्रदर्शन के लिए, आपसी स्नेह के इस प्रदर्शन के लिए काफी खुला है।

इसलिए, वह उनसे उसी तरह जवाब देने का आग्रह करता है। वह जोर देकर कहता है कि उसने कभी किसी के साथ गलत नहीं किया है। यही उसने कहा।

हमने किसी के साथ गलत नहीं किया है। हमने किसी को भ्रष्ट नहीं किया है। आप देखिए, जब पॉल कहता है कि हमने किसी के साथ गलत नहीं किया है, तो यहाँ गलत शब्द गलत काम करने के लिए एक सामान्य शब्द है।

हमने किसी के साथ कोई गलत काम नहीं किया है। यह गलत काम है जिसमें चोट पहुंचाना या अन्यायपूर्ण व्यवहार शामिल है। यह धार्मिकता के बिल्कुल विपरीत काम करना है।

और वह कहता है कि हमने ऐसा नहीं किया है। इसलिए, पौलुस ने कभी भी कुरिन्थियों के प्रति अन्यायपूर्ण व्यवहार नहीं किया। उसने उनके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार किया है, और उसने सुसमाचार में उनके साथ एक पिता के रूप में व्यवहार किया है।

और फिर वह कहता है कि हमने किसी को भ्रष्ट नहीं किया है। अब, भ्रष्टाचार शब्द का संबंध नैतिकता या सिद्धांत से है। जबकि हमने किसी के साथ अन्याय नहीं किया है शब्द अपमान या चोट या अन्यायपूर्ण व्यवहार की बात कर रहा है; यहाँ, भ्रष्ट शब्द का संबंध नैतिकता या सिद्धांत से है।

पॉल ने इस बात से इनकार किया कि उसने अपने प्रचार से कभी भी सुसमाचार को भ्रष्ट किया है, जो उसके कहे शब्दों से मेल खाता है: हम उन लोगों की तरह नहीं हैं जो सुसमाचार के विक्रेता हैं। उसका वचन परमेश्वर से है। और फिर उसने कहा कि हमने किसी का शोषण नहीं किया है।

हमने किसी का शोषण नहीं किया है। जब उसने कहा कि हमने किसी का शोषण नहीं किया है, तो इसका मतलब है कि हमने किसी को धोखा नहीं दिया है। यह दिलचस्प है कि पॉल इसी क्रिया का इस्तेमाल अध्याय 12, श्लोक 17 से 18 में करने जा रहा है, जहाँ वह उनसे आर्थिक रूप से पैसे लेने से इनकार करता है।

पॉल कह रहा है कि हमने आपका फ़ायदा नहीं उठाया है। हमने किसी का फ़ायदा नहीं उठाया है। लेकिन वह कहता है कि हमने किसी का फ़ायदा नहीं उठाया है, यानी हमने आपका शोषण नहीं किया है।

मैं चाहता हूँ कि आज बहुत से मंत्री निडर होकर कहें कि उन्होंने अपनी मंडली का शोषण नहीं किया है। हमने आपको धोखा नहीं दिया है। हमने आपको धोखा नहीं दिया है।

हमने आपको धोखा नहीं दिया है। शब्दकोश में इसे इसी तरह परिभाषित किया गया है। पॉल ने फिर से क्रिया का प्रयोग किया है।

आप देखिए, इन तीन क्रियाओं का प्रभाव, कोई नहीं, किसी के बारे में बात नहीं करना, इनकार को विशिष्ट के बजाय सामान्य बनाता है। मैंने किसी के साथ कुछ भी गलत नहीं किया है। यह बहुत संभव है कि पॉल अपने खिलाफ लगाए गए विशेष आरोपों का जवाब दे रहा हो।

यह बिलकुल संभव है। लेकिन यह पूरी तरह से अटकलबाजी ही है। उन्होंने बस इतना कहा कि कोई नहीं।

उसने किसी का नाम नहीं लिया। इसलिए, पॉल ने आपसी विश्वास की दलील देने के लिए अपनी बेगुनाही पर जोर दिया। अब, एक मिनट के लिए इस बारे में सोचें।

यीशु ने यूहन्ना अध्याय 8 में कहा, तुम में से किसने मुझे पाप के लिए दोषी ठहराया है? फिर, शमूएल के बारे में सोचिए जो लोगों को एक साथ बुलाने के बारे में बात कर रहा था। उसने कहा कि मैंने किसका बैल लिया है? मैंने किसकी संपत्ति ली है? मैं किसके साथ धोखा कर रहा हूँ? इसलिए, पौलुस खुद को उसी स्तर पर रखता है और कहता है, देखो, मैं भी उतना ही साफ और पवित्र हूँ। उसने इसे स्पष्ट रूप से नहीं कहा, लेकिन यह यीशु के कहने जैसा है, देखो, मैंने नहीं किया, तुम में से कौन मुझे किसी चीज़ के लिए दोषी ठहरा सकता है? और पौलुस वास्तव में 1 थिस्सलुनीकियों में कहेगा, तुम जानते हो कि हमने तुम्हारे बीच जो विश्वास करते हो, कितनी पवित्रता, न्याय और निष्कलंकता से व्यवहार किया है।

और आपको याद होगा कि प्रेरितों के काम अध्याय 24, आयत 16 में उसने क्या कहा था, जहाँ उसने कहा था, मैं हमेशा इसी बात का अभ्यास करता हूँ कि मेरा विवेक हमेशा परमेश्वर और मनुष्य के प्रति अपराध से रहित रहे। देखिए, यह पौलुस है, और वह हमें एक उदाहरण देता है कि ईमानदारी के मामले में एक सेवक को कैसा दिखना चाहिए। अब, इसे ठीक से समझिए।

हालाँकि यीशु पाप रहित था, फिर भी लोग उन पर आरोप लगाते हैं। हालाँकि शमूएल ने सही जीवन जिया, फिर भी उसे अपने बेटे से समस्याएँ थीं, और लोग फिर भी उसके खिलाफ़ विद्रोह करते रहे। तो, इसका मतलब यह नहीं है कि लोग आप में कोई गलती नहीं ढूँढ़ेंगे क्योंकि लोग हमेशा किसी में भी गलती ढूँढ़ सकते हैं।

वे स्वर्गदूतों में दोष ढूँढ़ सकते हैं, और वे किसी में भी दोष ढूँढ़ सकते हैं। लेकिन आप अपना जीवन सही तरीके से जी सकते हैं कि परमेश्वर की कृपा से आपका विवेक साफ़ हो। अब, पौलुस कुरिन्थियों के साथ किसी भी संभावित गलतफहमी से बचना चाहता है।

इसलिए, वह पद 3 में उन्हें आश्चस्त करता है, मैं यह तुम्हें दोषी ठहराने के लिए नहीं कह रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम इसे सही से समझो। मैं तुम्हें दोषी नहीं ठहरा रहा हूँ।

इसके विपरीत, मेरे पास आपके लिए जो है वह आपसी प्रेम और विश्वास है जो मुझे आपसे यह कहने में सक्षम बनाता है कि आप हमारे दिलों में एक साथ मरने और एक साथ जीने के लिए हैं। यही आगे आने वाली सभी बातों की कुंजी है। आप हमारे दिलों में एक साथ मरने और जीने के लिए हैं, जैसा कि न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल द्वारा अनुवादित है।

यह बिल्कुल वही कह रहा है। और फिर वह आगे कहता है, हम तुम्हारे साथ जिएंगे या मरेंगे। एनआईवी इसे इसी तरह से कहता है।

अधिकांश व्याख्याकारों का अनुमान है कि पौलुस केवल मित्रों के बीच वफ़ादारी के अटूट बंधनों की पारंपरिक अभिव्यक्ति का उपयोग कर रहा है। तो, आप देखते हैं, आयत 4 में, आपको आगे

क्या होता है, इसके लिए एक संक्रमणकालीन पुल मिलता है। पौलुस के शब्दों के चयन पर ध्यान दें।

ये विकल्प हमें पत्र के शुरुआती अध्यायों और उन विषयों के बारे में मेरी बात की ओर ले जाते हैं जो पत्र में बाद में सामने आएंगे। वह सांत्वना, खुशी और परेशानियों जैसे शब्दों का इस्तेमाल करता है, जो विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। अध्याय 1, श्लोक 3 से 8 की तरह, सांत्वना का शब्द और विषय अगले पैराग्राफ में व्याप्त है।

हम इसे आगे बढ़ते हुए देखेंगे। कुरिन्थियों की निंदा करने के बजाय, पौलुस उनसे बहुत भरोसा रखने के लिए कहता है। वह उसी शब्द का उपयोग करता है जिसका उपयोग उसने अध्याय 3, पद 12 में किया था जब वह निर्भीकता, पारूसिया के बारे में बात करता है, जिसका अर्थ है स्पष्ट भाषण और स्पष्टवादिता।

इसका यही मतलब है। अपने खुले दिल और स्पष्ट भाषण से, वह उनके लिए अपने महान गर्व को व्यक्त करता है। अब, अध्याय 7, आयत 5 से 7 में तीतुस का आगमन, क्योंकि जब हम मकिदुनिया में आए, तब भी हमारे शरीर को आराम नहीं मिला, बल्कि हम हर तरह से पीड़ित थे, बाहर झगड़े और भीतर डर।

लेकिन परमेश्वर, जो निराश लोगों को सांत्वना देता है, ने तीतुस के आगमन से हमें सांत्वना दी, और न केवल उसके आने से बल्कि उस सांत्वना से भी जिससे उसने तुम्हें सांत्वना दी है। इसलिए, पद 5 से 7 में, पौलुस कुरिन्थ में कलीसिया के संबंध में अपनी यात्राओं का विवरण फिर से शुरू करता है। अध्याय 1, पद 12 से अध्याय 2, पद 13 तक ये बातें उसके दिमाग में थीं, लेकिन उसने वह कहानी पूरी नहीं की।

अब, पौलुस उस कहानी को पूरा करने के लिए वापस जाता है। वह 2:14 से 7:4 तक अपनी सेवकाई के बारे में एक लंबे कोष्ठक की ओर मुड़ता है, और अब वह कहानी को फिर से शुरू करता है। कहानी वास्तव में क्या है? आप देखिए, अपनी दर्दनाक यात्रा के बाद, जिसे हम अध्याय 2 में देखते हैं, पौलुस कुरिन्थ वापस नहीं लौटा।

इसके बजाय, उसने इफिसुस से तीतुस को एक दुखद पत्र के साथ कुरिन्थ भेजा। उसे उम्मीद थी कि इसे अच्छी तरह से स्वीकार किया जाएगा, लेकिन उसे डर था कि ऐसा नहीं होगा। इसलिए, पौलुस त्रोआस गया, जहाँ प्रभु ने उसकी सेवकाई के लिए एक द्वार खोला, और जहाँ उसे तीतुस से मिलने की उम्मीद थी, जो चर्च से समाचार लेकर लौटा था।

लेकिन तीतुस वहाँ नहीं था। इसलिए, पौलुस बेचैन हो गया और सोचने लगा कि आखिर हुआ क्या है। इसलिए, बेचैन होकर, पौलुस मकिदुनिया चला गया और तीतुस के लौटने का बेसब्री से इंतज़ार करने लगा।

इसलिए, अध्याय 2 में उन्होंने अपने पाठकों को यहीं छोड़ा। उन्होंने अपनी प्रेरितिक सेवकाई के लिए परमेश्वर की स्तुति करने की अदम्य इच्छा को पूरा करने के लिए अपनी यात्रा कथा को बीच

में ही रोक दिया। अब, किस बात ने उन्हें ऐसा करने के लिए मजबूर किया? हम वास्तव में नहीं जानते। विषयांतर संभवतः स्वतःस्फूर्त है।

मेरा मतलब है, जैसे पॉल हमेशा करता था। यह एकमात्र जगह नहीं है जहाँ पॉल टूटता है। वह रोमियों के अध्याय 3 में टूट गया, और वह अध्याय 9 में वापस नहीं आता। वह ऐसा हर बार करता है।

पॉल तो पॉल ही है। इसे इस तरह से कहें। लेकिन अब, पद 5 में, वह अपने द्वारा किए गए कार्य का स्पष्टीकरण प्रस्तुत करता है।

उन्होंने कहा, क्योंकि जब हम मैसेडोनिया में आए, तब भी हमारे शरीर को आराम नहीं मिला। वह अपने बेचैन शरीर का वर्णन करना जारी रखते हैं। हमारे शरीर को आराम नहीं मिला।

अब, अध्याय 1, श्लोक 3 से 10 में हमने जिन दुखों के बारे में बात की थी, उनके बारे में सोचें। अब, उन्होंने कहा कि हम बेचैन थे, और अध्याय 4, श्लोक 8 में, उन्होंने कहा कि हम हर तरह से पीड़ित थे। लेकिन यहाँ, उन्होंने कहा कि हमारे शरीर को आराम नहीं मिला।

लेकिन हम हर तरह से पीड़ित थे। बाहर विवाद और अंदर डर। आप जानते हैं क्या? पॉल कोई अलौकिक व्यक्ति नहीं है।

वह भी हम जैसे ही इंसान हैं। शांति हमेशा से ही उनके हिस्से में नहीं थी। उन्होंने कहा कि मैं बेचैन था।

मैं बेचैन था। आप जानते हैं, बेचैनी किस वजह से थी? सच्ची चिंता, जैसे कि पौलुस ने तीतुस और कुरिन्थियों के लिए की थी, दुख सहने की क्षमता को बढ़ाती है। आप देखिए, जब हमारे पास सच्ची चिंता होती है, तो यह हमारी दुख सहने की क्षमता को बढ़ाती है।

हम इसे सहन करने में सक्षम हैं क्योंकि हमारे पास प्रेम की चिंताएँ हैं। लेकिन पॉल यहीं नहीं रुकता। और मुझे यह पसंद है।

वह कहता है, लेकिन भगवान। वह यहीं नहीं रुकता। लेकिन भगवान।

वह एक बहुत ही मजबूत विरोधी के साथ शुरू करता है। वह कहता है, लेकिन, जो उसके जीवन में भगवान की सांत्वना की पुष्टि करता है।

लेकिन भगवान। और हर बार जब आप भगवान के अलावा कुछ देखते हैं, तो कुछ ऐसा होता है जो उसके पीछे आता है। उनके अपने अनुभव ने उन्हें सिखाया कि भगवान करुणा के पिता और सभी सांत्वना के भगवान थे।

यही बात उन्होंने अध्याय 1, श्लोक 3 में कही है। लेकिन परमेश्वर, जो निराश लोगों को सांत्वना देता है, उसने हमें टाइटस के आगमन से सांत्वना दी, जो अकेले लोगों को सांत्वना देता है।

शाब्दिक अनुवाद कुछ इस तरह होगा। जो अकेले लोगों को सांत्वना देता है, दीन-हीन लोगों को सांत्वना देता है।

तीतुस की उपस्थिति से परमेश्वर। परमेश्वर को सांत्वना देने वाले के रूप में परिभाषित किया गया है। परमेश्वर के साथ पौलुस का संयोजन हमें उस महत्वपूर्ण विरोधाभास की याद दिलाता है जिसका उपयोग उसने अपने लेखन में किया है।

मेरा मतलब है, इफिसियों में, लेकिन परमेश्वर। परमेश्वर ने पौलुस की बेचैन निराशा को असीम खुशी में बदल दिया। क्या यह अद्भुत नहीं है? परमेश्वर यही करता है।

परमेश्वर ने पौलुस की बेचैन निराशा को असीम खुशी में बदल दिया। उसने यह कैसे किया? उसने तीतुस के आने से हमें सांत्वना दी। तीतुस के आने से, उसके आने और उसके परिणामस्वरूप उसकी उपस्थिति से उन्हें खुशी मिली।

और केवल उसके आने से ही नहीं, वरन उस शान्ति से भी जो तुम ने उसे दी। पौलुस ने तीतुस को ढूँढ़कर बहुत धन्य किया। और जब वह मकिदुनिया में तीतुस को ढूँढ़ रहा था, तो चारों ओर से व्याकुल हो रहा था।

लेकिन अब, टाइटस आ चुका था। परमेश्वर, जो निराश लोगों को सांत्वना देता है, उसने टाइटस के आने से अपने सेवक को सांत्वना दी। यह कितना सुखद पुनर्मिलन था।

परमेश्वर ने पौलुस को सांत्वना देने के लिए तीतुस का इस्तेमाल किया, जिस तरह से केवल एक सच्चा दोस्त और एक वफादार, सहानुभूतिपूर्ण साथी ही कर सकता था। तीतुस के पास प्रेरित के लिए समाचार था। क्या आप जानते हैं कि तीतुस किस बात को लेकर चिंतित था? पौलुस को सांत्वना न केवल उसके आने से मिली, बल्कि उस सांत्वना से भी मिली जिससे उसे सांत्वना मिली, क्योंकि तीतुस खुद नहीं जानता था कि उसे किससे मिलने जाना है।

सेवकाई में पौलुस के सहकर्मी ने प्रेरित की खुशी में हिस्सा लिया। आप जानते हैं, यह हमेशा कहा जाता है कि जब आप कोई समस्या साझा करते हैं, तो समस्या कम हो जाती है। जब आप खुशी साझा करते हैं, तो खुशी कई गुना बढ़ जाती है।

यह एक तरह का गणितीय सूत्र है, व्युत्क्रम परिवर्तन। आप एक समस्या साझा करते हैं, और समस्या कम हो जाती है। आप खुशी साझा करते हैं, और खुशी कई गुना बढ़ जाती है।

और यही पॉल और तीतुस के बीच होता है। तीतुस आता है। कितना सुखद पुनर्मिलन। तीतुस द्वारा कुरिन्थियों के बारे में लाई गई खबर से पॉल और तीतुस दोनों को सांत्वना मिली।

इसलिए, यह केवल तीतुस का आना, उसके द्वारा दिया गया समाचार या तीतुस की सांत्वना ही नहीं थी जिसने उसे सांत्वना दी। जैसा कि वह लिखता है, वह आपकी लालसा का जोरदार ढंग से उल्लेख करता है। देखें कि वह क्या कहता है, न केवल उसके आने से बल्कि उस सांत्वना से भी जिससे उसे आपके द्वारा, आपकी अपनी लालसा से सांत्वना मिली।

आप देखिए, पौलुस ने धार्मिक दृष्टिकोण से इस सारी मानवीय गतिविधि को अंततः परमेश्वर के कार्य के रूप में समझा। उसने देखा कि सब कुछ परमेश्वर द्वारा संचालित है। चाहे अंतिम और मध्यवर्ती कारण कुछ भी हों, इन सभी ने पौलुस के आनंद को पहले से कहीं अधिक बढ़ा दिया।

देखिए, इन आयतों से हम क्या सीखते हैं? इन आयतों से हम साफ़ तौर पर देख सकते हैं कि मानवीय मामलों ने प्रेरितों को निराश कर दिया था। मानवीय मामलों से मेरा मतलब है, पौलुस भी एक इंसान था। जो कुछ भी हो रहा था, उससे पौलुस को एक तरह का अवसाद हो गया था।

लेकिन दूसरी बात यह है कि परमेश्वर को पीड़ित लोगों पर दया आती है। यही हम यशायाह 49, आयत 13 में देखते हैं। फिर हम देखते हैं कि अवसाद को दूर करने के लिए उसकी सर्वोच्च शक्ति और मानवीय एजेंसी में, वह कह सकता है, परमेश्वर की स्तुति हो, जो सब प्रकार की सांत्वना का परमेश्वर है।

परमेश्वर साधनों का उपयोग करता है। लेकिन दिन के अंत में, अंततः, यह परमेश्वर ही है। अब, हम पद 8 पर चलते हैं। पद 8 से, हम ईश्वरीय दुःख के परिणामस्वरूप कलीसिया के पश्चाताप को देखने जा रहे हैं।

पद 8 से, क्योंकि भले ही मैंने तुम्हें अपने पत्र से दुखी किया हो, लेकिन मुझे इसका अफसोस नहीं है, हालाँकि मुझे इसका अफसोस था, क्योंकि मैं देखता हूँ कि मैंने तुम्हें उस पत्र से दुखी किया, हालाँकि केवल थोड़े समय के लिए। अब मैं खुश हूँ, इसलिए नहीं कि तुम दुखी हुए, बल्कि इसलिए कि तुम्हारे दुख ने पश्चाताप को जन्म दिया।

क्योंकि तुम ने परमेश्वर की भली भांति शोक किया, कि हमारी ओर से तुम्हें कुछ हानि न पहुंचे। क्योंकि परमेश्वर की भली भांति शोक से पश्चाताप उत्पन्न होता है, जिस से उद्धार होता है, और पछताना नहीं पड़ता; परन्तु सांसारिक शोक से मृत्यु उत्पन्न होती है। हम देखते हैं कि परमेश्वर की भली भांति शोक ने तुम्हारे मन में कैसी उत्सुकता, और अपने आप को शुद्ध करने की कैसी तत्परता, और कितना क्रोध, और कितना भय, और कितनी लालसा, और कितना उत्साह, और कितना दण्ड उत्पन्न किया है।

हर बिंदु पर, आपने इस मामले में खुद को निर्दोष साबित किया है। आपने इस मामले में खुद को निर्दोष साबित किया है। आप देखिए, पौलुस ने कुरिन्थियों के साथ व्यक्तिगत टकराव से बचने की कोशिश की, इसलिए नहीं कि वह उनसे डरता था, बल्कि इसलिए कि उसे विश्वास था कि वह उनके मतभेदों को सुलझा सकता है, वे अपने बीच के मतभेदों को सुलझा सकते हैं।

इसलिए, पछतावे के साथ, और पद 8 में, और आंसुओं के साथ, उसने अपना अनुशासनात्मक पत्र लिखा। आप देखिए, पौलुस यहाँ एक नाजुक संतुलन बनाए रखने की कोशिश कर रहा है। वह कुरिन्थियों को अच्छी तरह से ज्ञात घटनाओं को याद करके चर्च के साथ अपने मेल-मिलाप को पूरा करने का नाजुक प्रयास करता है।

अगर उनके रिश्ते से सारी गलतफहमियाँ और संदेह दूर करने हैं, तो उनके अतीत को खोला जाना चाहिए, न कि उसे छिपाया जाना चाहिए या कालीन पर झाड़ दिया जाना चाहिए। आप देखिए, आप इसे कालीन पर झाड़ देते हैं, या आप इसे ढक देते हैं, यह भविष्य में किसी झगड़े में फिर से उभर आएगा, और कभी-कभी यहीं पर चर्च गलतियाँ करते हैं। आप देखिए, बस इसके बारे में भूल जाइए।

चलो इसे भूल जाते हैं। इसे मत भूलो। इसके बारे में बात करो।

इसके बारे में बात करें। अगर आप इसके बारे में बात करते हैं, तो आप दोनों इसके बारे में रो सकते हैं या इसके बारे में रो सकते हैं, और फिर आप एक-दूसरे को माफ़ कर सकते हैं, और एक बार जब आप इसके बारे में बात करते हैं, तो यह अब और नहीं रहता है। लेकिन अगर हम इसे छुपाते हैं और कहते हैं, ठीक है, यह ठीक है, मैं ठीक हूँ, इसके बारे में बात मत करो।

इसके बारे में बात करें। पॉल ने इसके बारे में बात की। याद रखें मैंने आपको बताया था कि यह एक पादरी पत्र है, और यह पॉल, पादरी, कह रहा है, देखो, यह इन मुद्दों से निपटने का एक तरीका है।

तो, वह क्या करता है? वह सबसे पहले उनकी सराहना करता है क्योंकि उन्होंने उसके दुखद पत्र पर सकारात्मक प्रतिक्रिया दी, और फिर वह उन्हें इस मामले में उनकी बेगुनाही का आश्वासन देता है, और फिर वह कुरिन्थियों के साथ एक विश्वसनीय और प्रभावी भागीदार और उनके और अपने प्रतिनिधि के रूप में खिताब स्थापित करता है। तो, इस प्रक्रिया में, पॉल ईश्वर के साथ उनके रिश्ते और व्यक्तिगत रूप से उनके साथ उनके रिश्ते के संदर्भ में, उनके द्वारा उन्हें दिए गए दर्द और दुःख से धर्मशास्त्रीय रूप से निपटता है। इसलिए, वह उन्हें साबित करता है कि उसके दिल में वास्तव में कुरिन्थियों के साथ मरने और साथ रहने की इच्छा है।

तो, आप देखिए, आयत 8 से 9अ तक, पौलुस कहता है, इस कारण, अपने नए और असीम आनंद के कारण, उसने वह पत्र लिखा जिससे उन्हें बड़े संकट से दुःख हुआ। यही वह कहता है। उसने बड़े संकट से पत्र लिखा।

उन्होंने कहा, भले ही मैंने आपको अपने पत्र से दुखी किया हो, लेकिन मुझे इसका अफसोस नहीं है, मुझे इसका अफसोस है, क्योंकि मैं देखता हूँ कि मैंने उस पत्र से आपको दुखी किया, हालांकि केवल थोड़े समय के लिए, बहुत अधिक परेशानी के कारण। वह दिल की पीड़ा के बारे में बात करता है।

हृदय की पीड़ा। आप देखिए, पौलुस ने अपनी रद्द की गई यात्रा का उल्लेख या स्पष्टीकरण नहीं किया है, जिसे हम 1.23 में देखते हैं, लेकिन वह केवल पत्र का उल्लेख करता है। इस पत्र ने उन्हें पीड़ा और दुःख पहुँचाया था।

पॉल ने उपाधियों के साथ सहमति व्यक्त की ताकि कोरिंथियन उनके लिए उसके प्यार की सीमा जान सकें, लेकिन उसके सबसे अच्छे इरादों के बावजूद। टाइटस की वापसी से पहले एक पल

ऐसा आया जब प्रेरित को पत्र भेजने का पछतावा हुआ। इसलिए, पॉल कहते हैं, शायद मुझे पत्र नहीं भेजना चाहिए था।

लेकिन अब जब पत्र ने उसकी इच्छित मंज़िल प्राप्त कर ली है, तो उसने कहा, मुझे इसका कोई अफ़सोस नहीं है। जब पत्र भेजा गया था, तो पॉल ने सोचा था कि शायद मुझे इसे नहीं भेजना चाहिए था। और भी, जब टाइमस समय पर वापस नहीं आया, तो शायद मैंने वह पत्र भेजकर कोई गलती की।

लेकिन पत्र का सकारात्मक परिणाम निकला और उन्होंने कहा, मुझे इसका कोई अफ़सोस नहीं है क्योंकि इसने अपना काम कर दिया है। मुझे खेद हो सकता है, लेकिन जब पत्र का स्वागत अधर में लटका था, तब उन्हें इसका अफ़सोस था। लेकिन अब उन्होंने कहा, नहीं, मुझे इसका कोई अफ़सोस नहीं है।

पॉल अब आनन्दित हो सकता है। अब मैं आनन्दित हूँ, इसलिए नहीं कि तुम दुखी थे, इसलिए नहीं कि इससे वे दुखी हुए, इसलिए नहीं कि तुम दुखी थे, बल्कि इसलिए कि तुम्हारे दुःख ने तुम्हें पश्चाताप की ओर प्रेरित किया, मन में परिवर्तन की ओर प्रेरित किया। आप जानते हैं कि पॉल क्या कह रहा था; मैं बहुत खुश हूँ कि इस पत्र का उपयोग परमेश्वर ने कुरिन्थियों को दुःख और चंगाई देने के लिए किया, जिससे प्रेरित स्वयं बहुत प्रसन्न हुआ।

इस दुःख की प्रकृति के बारे में, पौलुस अपने उपचारात्मक दुःख और पश्चाताप के बीच अंतर करता है। पश्चाताप मन का परिवर्तन है, पूरी तरह से और पूरी तरह से, उनके दुःख का फल। वह पश्चाताप शब्द का उपयोग करता है।

यह काफी रोचक है। यह ऐसा शब्द नहीं है जिसका इस्तेमाल पॉल अक्सर करते हैं। वास्तव में, पॉल पश्चाताप के बारे में बात करते हैं और अपने सभी पत्रों में केवल चार बार पश्चाताप शब्द का उपयोग करते हैं।

आप रोमियों 9:10, रोमियों 2:4, और 2 तीमुथियुस 2:25 में पाते हैं, ये एकमात्र स्थान हैं जहाँ वह पश्चाताप को संज्ञा के रूप में उपयोग करता है, और क्रिया केवल एक बार आती है, वह है 2 कुरिन्थियों 12:21। लेकिन वह यहाँ अलग-अलग शब्दों का उपयोग करता है, दुःख और पश्चाताप, लेकिन पश्चाताप का अर्थ है मन का परिवर्तन। आप देखिए, जब पॉल दुःख के बारे में बात करता है, तो दुःख और पश्चाताप के बीच का अंतर यह है कि दुःख मन के परिवर्तन के बजाय मनोदशा के परिवर्तन को इंगित करता है।

पहला है मूड में बदलाव, भावनाओं में बदलाव, रवैये में बदलाव, लेकिन पश्चाताप का मतलब है पूरी तरह से जीवन में बदलाव। दुःख का मतलब है पश्चाताप या पछतावा। दूसरे का मतलब है दिल में बदलाव, रवैये और व्यवहार में बदलाव।

हम सभी जानते हैं कि जब छोटे बच्चे गलत व्यवहार करते हैं, तो वे कहते हैं, ओह डैड, मुझे माफ़ कर दो, मुझे माफ़ कर दो, मुझे माफ़ कर दो, बस इतना ही। और फिर वे चले जाते हैं। और फिर, दो मिनट बाद, वे फिर से वही काम करते हैं।

मैं कहता हूँ, ओह, मुझे खेद है, मुझे खेद है। पॉल ऐसा नहीं कह रहा है। यह ईश्वरीय दुःख नहीं है।

मेरा मतलब है, कुछ लोग इसलिए पछताते हैं क्योंकि वे पकड़े गए हैं। लेकिन पश्चाताप का मतलब है अपने रवैये में बदलाव। इसलिए, पश्चाताप आध्यात्मिक है।

यह भावनात्मक परिवर्तन से कहीं ज़्यादा आध्यात्मिक है। जब कोई व्यक्ति पूरी तरह से बदल जाता है, तो पश्चाताप के बजाय, विश्वास पॉल का पसंदीदा शब्द था, जो गैर-यहूदी दुनिया में किसी व्यक्ति के परमेश्वर की ओर मुड़ने का वर्णन करता था। प्रारंभिक चर्च, अपने यहूदी परिवेश में, पश्चाताप शब्द का समर्थन करता था।

पौलुस ने विश्वास का पक्ष लिया। लेकिन यहाँ और 12:21 दोनों में, पौलुस पश्चाताप की शब्दावली का उपयोग यह बताने के लिए करता है कि मसीही अपने गलत विकल्पों को सुधारने के लिए क्या करते हैं। जब मसीही गलत चुनाव करते हैं, जब कोई व्यक्ति गलत चुनाव करता है, तो पौलुस के प्रयोग के अनुसार, आप पश्चाताप करते हैं।

आप इससे पूरी तरह से दूर हो जाते हैं। लेकिन यह काफी दिलचस्प है। कृपया इस पर ध्यान दें।

पॉल के प्रयोग में, पश्चाताप चर्च में रहने वालों के लिए है, बाहर के अविश्वासियों के लिए नहीं। मुझे खुद को दोहराने दें। पॉल के प्रयोग में, मैंने जो अंश आपको सुनाए हैं, उनमें आप देखते हैं कि पश्चाताप चर्च में रहने वालों के लिए है, बाहर के अविश्वासियों के लिए नहीं।

इसका मतलब यह नहीं है कि अविश्वासी पश्चाताप नहीं करते। हम सभी ने पश्चाताप किया, कम से कम मैं तो यही मानूंगा कि प्रभु को जानने से पहले। लेकिन यहाँ पौलुस ने पश्चाताप शब्द का इस्तेमाल विश्वासियों के लिए किया है।

कुरिन्थियों का दुःख परमेश्वर के प्रति था, जैसा कि परमेश्वर ने चाहा था। अर्थात्, जैसा कि न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल कहती है, यह परमेश्वर की इच्छा के अनुसार था। कुरिन्थियों का दुःख परमेश्वर की इच्छा के अनुसार था।

और यह ईश्वरीय शोक था। NRSV इसे इसी तरह से व्यक्त करता है। यही अभिव्यक्ति पद 9, पद 10 और पद 11 में भी दोहराई गई है।

पॉल के पत्र से कुरिन्थियों को किसी भी तरह से स्थायी रूप से नुकसान नहीं पहुँचा। अनुग्रह के क्षेत्र में उन्हें कोई नुकसान नहीं हुआ। ये वाक्यांश संकेत देते हैं कि पॉल जिस तरह के दुःख की बात कर रहा है, वह न केवल ईश्वर द्वारा प्रेरित है, बल्कि लोगों को उनके चुनाव और पाप के घृणित चरित्र को ईश्वर और दूसरों और स्वयं के प्रति उनके दिल में अपराध के रूप में देखने का कारण भी बनता है। इसलिए, आप पश्चाताप करते हैं, आप पूरी तरह से और पूरी तरह से बदल जाते हैं।

पौलुस जिस दुःख की बात कर रहा है, वह संसार के अनुभव से बहुत अलग है और जो उनमें मृत्यु का कारण बनता है। इसका सबसे बड़ा मूल्य यह है कि यह उल्लेखनीय लाभ उत्पन्न करता है। यह मन में परिवर्तन लाता है, जो बदले में विश्वासी के लिए उद्धार की ओर ले जाता है।

इसका मतलब यह है कि जब हम अपने निर्णयों और गलत निर्णयों के लिए ईश्वरीय दुःख महसूस करते हैं, तो हमें उनके बारे में अपना मन बदलने और उन्हें अस्वीकार करने और ईश्वर के सामने उन्हें स्वीकार करने के लिए उचित कार्रवाई करने के लिए प्रेरित किया जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि हम उनके लिए दंड से बच जाते हैं। इसलिए, पॉल इसके बारे में बात करता है।

फिर, श्लोक 10 में, वह फिर से लिखता है कि दर्द एक ईश्वरीय दुःख था; ऐसा इसलिए है क्योंकि इसने उस तरह का पश्चाताप पैदा किया जो उद्धार की ओर ले जाता है। इसलिए, हमें यह देखने की ज़रूरत है कि पश्चाताप, दुःख, पछतावा और पश्चाताप के बीच एक बहुत बड़ा अंतर है। एक मूड का परिवर्तन है, और दूसरा मन का परिवर्तन है।

और फिर, श्लोक 11 में, वह कहता है, क्योंकि देखो, देखो, देखो, वह कहता है कि, क्योंकि देखो कि इस ईश्वरीय शोक ने तुम्हारे अंदर कितनी उत्सुकता पैदा की है। खुद को शुद्ध करने की कितनी उत्सुकता, कितना क्रोध, कितना भय, कितनी लालसा, कितना जोश, कितना दंड। हर बिंदु पर, तुमने इस मामले में खुद को निर्दोष साबित किया है।

वहाँ आप पॉल को यह कहते हुए देखते हैं, देखो, इसने वही क्रिया, यही चीज़ पैदा की। और यह बहुत दिलचस्प है कि पॉल ने यहाँ जितने भी संज्ञाओं का इस्तेमाल किया है, इसे देखिए, क्या उत्सुकता, क्या आक्रोश, क्या चिंता, क्या लालसा, क्या सज़ा, मेरा मतलब है, क्या उत्साह, ये सभी संज्ञाएँ किसके द्वारा दोहराई गई हैं? और इसका सीधा सा मतलब है कि यह कितना महान है, यह बहुत गहन है। मेरा मतलब है, आप देखिए, क्योंकि पॉल इसे प्रतिकूलता के साथ दोहराता है, लेकिन बहुत शक्तिशाली, जो ईमानदारी उत्पादन से जुड़ी है।

कुरिन्थ के लोग अब अपने चर्च की समस्याओं से निपटने के लिए उत्सुक हैं। वास्तव में, पौलुस लिखता है, आपमें खुद को साफ़ करने की उत्सुकता है। खुद को साफ़ करने की कितनी उत्सुकता है।

वे अब इस बारे में कुछ करने के लिए तैयार थे। वे अब तैयार थे। यहाँ, आप पौलुस को उनसे यह कहते हुए देख सकते हैं कि आप खुद को दोष से मुक्त करने के लिए तैयार हैं।

और फिर वह कहता है, कितना आक्रोश, कितना भय, मेरा मतलब है, दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति पॉल के साथ उनके रिश्ते और चर्च के भविष्य को प्रभावित करेगी। लेकिन अब वे इसे सही करने के लिए तैयार हैं। अब, आगे बढ़ते हुए देखें कि पॉल पद 12 से पद 16 तक क्या कह रहा है, पॉल कुरिन्थियों में अपने भरोसे की पुष्टि के बारे में बात करता है।

पद 12 में, पौलुस समझाता है कि उसने दुःख भरा पत्र क्यों लिखा। क्यों और क्यों नहीं? आइए इसे इस तरह से समझें। इसलिए, हालाँकि मैंने तुम्हें लिखा था, यह उस व्यक्ति के कारण नहीं था

जिसने गलत किया था, न ही उस व्यक्ति के कारण जिसके साथ गलत किया गया था, बल्कि इसलिए कि हमारे लिए तुम्हारा जोश परमेश्वर के सामने तुम्हारे सामने प्रकट हो।

पद 12 में पौलुस यह बताता है कि उसने क्यों लिखा। बेशक, कुरिन्थ में हुई दर्दनाक घटना एक दुखद पत्र लिखने का अवसर थी, लेकिन पौलुस ने गलत काम करने वाले की ओर ध्यान आकर्षित करने या खुद के साथ किए गए गलत काम का विरोध करने के लिए नहीं लिखा। पौलुस के लिए, कुछ और ज़्यादा महत्वपूर्ण था।

इस सब के पीछे सिर्फ़ गलत काम करने वाले और पीड़ित पक्ष से ज़्यादा एक और महत्वपूर्ण मुद्दा था। पॉल खुद के लिए और खुद के बारे में बोलता है। वह गलत था, इसमें कोई संदेह नहीं है।

लेकिन प्रेरित के साथ उनके रिश्ते के मामले में उनकी आध्यात्मिक ईमानदारी दांव पर लगी थी। सिर्फ़ पौलुस के नाराज़ होने से ज़्यादा कुछ और भी दांव पर लगा था। चर्च में चल रही परेशानी ने पहले ही कुरिन्थियों के अपने आध्यात्मिक पिता के प्रति रवैये पर बेवफ़ाई और अनादर का बादल छा दिया था।

इस प्रकार, कुरिन्थियों को यह याद दिलाने की आवश्यकता थी कि परमेश्वर के साथ उनका रिश्ता और पौलुस के साथ उनका रिश्ता अविभाज्य था। इसलिए, कुछ बड़ा दांव पर लगा था। परमेश्वर के साथ उनका रिश्ता और पौलुस के साथ उनका रिश्ता आपस में जुड़ा हुआ था, और यही दांव पर लगा था।

और इसीलिए उसने उन्हें पत्र लिखा। इसलिए, यह सिर्फ़ किसी के द्वारा पॉल को अपमानित करने के बारे में नहीं है। इसलिए उसने अपराधी का ज़िक्र नहीं किया।

नहीं, बिलकुल नहीं। क्योंकि कुछ और भी बड़ा दांव पर लगा था, और फिर पद 13 में उसने कहा, इन सब बातों से हमें प्रोत्साहन मिलता है।

इस में हमें सांत्वना मिलती है। इस में हमें सांत्वना मिलती है। अपनी सांत्वना के अलावा, हम तीतुस के आनन्द से और भी अधिक आनन्दित होते हैं, क्योंकि तुम सब के कारण उसका मन शान्त हो गया है।

इससे हमें प्रोत्साहन मिलता है। आप देखिए, पौलुस अब उनके विश्वास के पिता के रूप में बात कर रहा था। वह उनकी परम आध्यात्मिक भलाई के लिए इतना चिंतित है कि वह उन्हें पीड़ा पहुँचाने में संकोच नहीं करता, भले ही ऐसा करने से उसे कम पीड़ा न हो।

ऐसा दर्द, जब परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल किया जाता है, तो एक प्रकार का पश्चाताप उत्पन्न करता है जो उद्धार की ओर ले जाता है और चर्च के भीतर की कठिनाइयों को ठीक करता है। और फिर वह अब पद 13 के अंतिम भाग में बात करता है, हम तीतुस के आनंद पर और भी अधिक आनन्दित होते हैं। देखिए, तीतुस को निश्चित रूप से एक अच्छा अनुभव हुआ था।

और आप पाते हैं कि पौलुस अब पद 13 के अंतिम भाग से पद 16 के अंत तक तीतुस की यात्रा के बारे में बात कर रहा है। पौलुस ने पहले ही अपनी खुशी व्यक्त कर दी थी। आप तीतुस की रिपोर्ट पर उसकी प्रतिक्रिया भी देख सकते हैं।

यह अध्याय 7, आयत 5 से 9 में है। और उसने दुःख भरे पत्र के प्रति कुरिन्थियों की प्रतिक्रिया पर विचार किया है। यह आयत 9 से 12 में है। लेकिन यहाँ, पौलुस आयत 6 से 7 के विचार को फिर से उठाता है। वह कुरिन्थ में तीतुस के अनुभव पर नए सिरे से ध्यान देता है।

आप देखिए, पहले पौलुस ने अपना ध्यान तीतुस द्वारा दी गई सांत्वना पर केंद्रित किया था। अब, वह कुरिन्थ में तीतुस के सकारात्मक स्वागत का उसके प्रतिनिधि पर पड़ने वाले अनुकूल प्रभाव का वर्णन करता है। इसलिए, पौलुस इस मामले में उनके व्यवहार के लिए उनकी सराहना करता है।

इसीलिए वह कहता है कि हम तीतुस की खुशी से और भी अधिक आनन्दित होते हैं; आप सभी के द्वारा उसका मन तरोताजा हो गया है और उसे शांति मिली है। उसे प्रोत्साहन मिला है। पौलुस विशेष रूप से यह देखकर प्रसन्न हुआ कि तीतुस कुरिन्थ की अपनी यात्रा के बाद कितना खुश था।

पौलुस की खुशी तब और बढ़ गई जब उसने जाना कि तीतुस की आत्मा को पूरी कलीसिया ने तरोताजा कर दिया है। इसलिए, तीतुस खुश था क्योंकि कलीसिया ने उसके मन को पूरी तरह से शांत कर दिया था। उस पल की खुशी यह समझा सकती है कि पौलुस क्या कहता है जब वह कहता है, तुम सब।

वह सुविधाजनक रूप से कुरिन्थियन चर्च में लंबित समस्याओं को अनदेखा कर रहा था। अब वह कहता है, तुम सब। अध्याय 6, श्लोक 14 से 7 में लंबित समस्याएँ असमान थीं।

वह सब भूल गया। उसने कहा कि आप सभी की वजह से हम तरोताजा हो गए हैं। पॉल खुश था।

फिर, आयत 14 में, पौलुस अपने आनन्द का एक और कारण बताता है। क्योंकि यदि मैं उसके सामने तुम्हारे विषय में कुछ घमण्ड करता, तो मुझे लज्जित नहीं होना पड़ता। परन्तु जैसे हम ने जो कुछ तुम से कहा वह सब सच था, वैसे ही हमारा तीतुस के सामने घमण्ड करना भी सच निकला।

पौलुस के आत्मा से प्रेरित प्रेम की सच्चाई उनके लिए उनकी देखभाल की वास्तविकता में समा गई थी। पौलुस अपने धर्मांतरित लोगों में परमेश्वर की कृपा से कभी निराश नहीं हुआ। मैं अपनी बात दोहराता हूँ।

ईश्वर कभी भी अपने धर्मांतरित लोगों पर ईश्वर की कृपा से निराश नहीं हुआ। वह आशावादी था और हमेशा आशावान रहता था। उसे विश्वास था कि उनके बारे में उसका दावा सही साबित होगा।

इसके विपरीत, पौलुस को शर्मिंदा होने की बजाय उनके बारे में जो गर्व था वह सच साबित हुआ। आप देखिए, तीतुस के स्वागत से कुरिंथियों पर पौलुस का भरोसा सही साबित हुआ। हम कल्पना कर सकते हैं कि तीतुस की आशंका कितनी गहरी थी जब वह कुरिंथ की यात्रा कर रहा था।

पॉल ने तीतुस को भरोसा दिलाया कि सब कुछ ठीक हो जाएगा। लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि तीतुस को यकीन था। लेकिन उसके मन में जो भी डर था, वह दूर हो गया और वह आश्वस्त और उत्साहित हो गया।

इसलिए, कुरिंथियों ने न केवल उसका स्वागत किया बल्कि उसकी आत्मा को ताज़ा किया और खुद को वह सब साबित किया जिस पर पौलुस ने गर्व किया था। पौलुस की भविष्यवाणी उतनी ही सच साबित हुई जितनी कि उसके द्वारा कहे गए और लिखे गए शब्द। वास्तव में, तीतुस को भी कुरिंथियों से एक बड़ी आशीष मिलती है, इस हद तक कि जब भी वह उनके द्वारा दिखाए गए सम्मान और पौलुस की पत्नी के प्रति उनकी आज्ञाकारिता को याद करता है, तो उसका अपना प्रेम उनके प्रति उमड़ पड़ता है।

पॉल का अपने पाठकों पर भरोसा जायज़ था। इससे उसे मनचाहा नतीजा मिला और उसे खुशी भी मिली। हालाँकि, उसका भरोसा सिर्फ़ उन पर ही नहीं था।

पद 15 को देखिए, जब तीतुस को याद आता है कि कुरिंथियों ने पौलुस के प्रति और खुद के प्रति आज्ञाकारिता दिखाई थी, तो उनके प्रति उसका स्नेह और भी बढ़ जाता है। आप देख सकते हैं कि पद 15 में इसे बहुत स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है। तीतुस बहुत खुश था, और उसका दिल आपके लिए और भी अधिक दुखी हो जाता है जब वह आप सभी की आज्ञाकारिता को याद करता है और कैसे आपने उसका स्वागत भय और कांपते हुए किया था।

यह दिलचस्प है। मेरा मतलब है, यह वाक्यांश, भय और कांपते हुए, नए नियम में केवल पॉल द्वारा इस्तेमाल किया गया है। इसका इस्तेमाल केवल पॉल द्वारा किया गया है।

1 कुरिंथियों 2, पद 3. फिलिप्पियों 2, पद 12, जहाँ कुरिंथियों को एक समुदाय के रूप में एक साथ मिलकर डर और काँपते हुए अपने उद्धार के लिए आगे बढ़ने के लिए कहा गया है। व्यक्तिगत रूप से नहीं। यह कहता है, अपने डर से बाहर निकलो।

"तुम्हारा" बहुवचन है। वहाँ उद्धार एकवचन है। अपने उद्धार, सामूहिक रूप से, उनके उद्धार, एक चर्च के रूप में, भय और कांपते हुए आगे बढ़ें।

और इसका प्रयोग इफिसियों 6, पद 5 में भी किया गया है। आप देखिए, यह शब्द पौलुस ने पुराने नियम से ही लिया है। यह ईश्वरीय महिमा के सामने उचित मानवीय रुख को संदर्भित कर सकता है जब आप भय और कांपते हुए परमेश्वर के सामने आते हैं, जैसा कि आप भजन 2, पद 11 में पढ़ते हैं। या यह परमेश्वर की सुरक्षात्मक शक्ति के प्रति मानवीय प्रतिक्रिया को संदर्भित कर सकता है।

यहाँ प्रेरित के प्रतिनिधि के रूप में उनके बीच तीतुस की उपस्थिति पर कुरिन्थियों की प्रतिक्रिया है। मेरा मतलब है, शायद पौलुस यशायाह अध्याय 19, श्लोक 16 का हवाला दे रहा था, जो मिस्र के उस भय को संदर्भित करता है जिसका मिस्र अनुभव करेगा जब उसे परमेश्वर के उठे हुए हाथ का एहसास होगा। लेकिन कुरिन्थियों का डर और काँपना अंततः तीतुस को न केवल प्रेरित के प्रामाणिक और आधिकारिक प्रतिनिधि के रूप में बल्कि एक दिव्य दूत के रूप में मान्यता देने के कारण था।

यह दिलचस्प है कि पौलुस ने कुरिन्थ में अपनी सेवकाई बहुत डर और काँपते हुए शुरू की। आप इसे 1 कुरिन्थियों अध्याय 2, पद 3 में और भी अधिक काँपते हुए देखते हैं क्योंकि उसने परमेश्वर के सामने अपनी भयानक ज़िम्मेदारी को स्वीकार किया था। इसलिए, अब यह उचित था कि कुरिन्थ में हिचकिचाने वाली मण्डली को भी डर और काँपते हुए अनुभव करना चाहिए जब उन्हें परमेश्वर के सामने अपनी ज़िम्मेदारी और उन लोगों के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी का सामना करना पड़े जिन्होंने उन्हें परमेश्वर की इच्छा की घोषणा की।

मेरा मतलब है, देखिए पॉल यहाँ क्या कहता है। उसे भरोसा था, और उसका भरोसा सही साबित हुआ। इसलिए, पॉल को उन पर भरोसा बना हुआ है।

पद 16 में, मैं आनन्दित हूँ क्योंकि मुझे तुम पर पूरा भरोसा है। पौलुस फिर से आनन्द के विषय को दोहराता है। मेरा मतलब है, इस पद में, आप पहले से ही उसे पद 4, पद 7 और पद 13 में आनन्द के बारे में बात करते हुए देख सकते हैं।

मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि कुरिन्थियों के साथ उनका मेलमिलाप प्रभावी और संतोषजनक है। मुझे पूरा भरोसा है। अब वह खुद को कुरिन्थियों पर निर्भर रहने में सक्षम पाता है।

मेरा मतलब है, यह एक बहुत ही प्रेरक बयानबाजी है। पॉल ने जानबूझकर अध्याय 8 से 9 में आने वाले अनुरोधों के लिए आधार तैयार किया है। अध्याय 8 से 9 में, पॉल संग्रह और देने के बारे में बात करने जा रहा है। इसलिए, अध्याय 7 में, पॉल एक शक्तिशाली तरीके से प्रेरक बयानबाजी के साथ समाप्त होता है, जानबूझकर 8 और 9 में आगे क्या होने वाला है, इसके लिए आधार तैयार करता है। इसलिए शायद फिर से, वह अपनी पिछली दर्दनाक यात्रा के विपरीत, एक आनंदमय यात्रा की प्रतीक्षा कर रहा है।

लेकिन पौलुस का पूरा भरोसा किस हद तक गलत था? खैर, हम शायद 2 कुरिन्थियों 10-13 में देखेंगे कि अभी भी समस्याओं का सामना करना बाकी था। लेकिन कम से कम इस बिंदु पर, उसे पूरा भरोसा था। फिर भी, रोमियों में ऐसे मजबूत संकेत हैं जो बताते हैं कि कुरिन्थियों ने वास्तव में इस अवसर पर उठकर पौलुस के संग्रह का समर्थन किया।

इसलिए, पौलुस यहाँ पत्र के पहले भाग को बहुत ही सकारात्मक टिप्पणी के साथ समाप्त करता है। बहुत, बहुत सकारात्मक। हमें दूसरों पर इस भरोसे को और अधिक लागू करने की आवश्यकता है।

हालाँकि, लोग इस तरह के भरोसे का आधार नहीं हो सकते। आधार परमेश्वर की शक्ति और परमेश्वर की उन प्रार्थनाओं का उत्तर देने की इच्छा है जो परमेश्वर की महिमा और दूसरों की भलाई की तलाश करती हैं। यह देखना बहुत महत्वपूर्ण है कि पौलुस यहाँ क्या करता है।

उसकी खुशी की भावना उन लोगों की संपूर्ण भलाई से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है जिनके साथ वह प्रेमपूर्वक चिंतित है। चाहे पद 13-14 में उसके साथी यात्री हों या पद 15-16 में विश्वास में उसके धर्मातरित लोग, कुरिन्थियों में पौलुस का विश्वास उनके प्रति उसके हृदय और जीवन के खुलेपन से उत्पन्न होता है। साथ ही कुरिन्थियों के जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह के निरंतर संचालन से भी।

उन्हें इस बात का भी पूरा भरोसा है कि जब वे बाहरी दुष्ट प्रभावों से अप्रभावित रहते हैं, तो उनके प्रति उनका रवैया कैसा होता है। वे अब पॉल के प्रति खुले हुए थे। उन्होंने पॉल के प्रति अपना दिल खोल दिया, क्योंकि पॉल ने भी उनके प्रति अपना दिल खोल दिया था।

यह डॉ. अयो अदेवुया द्वारा 2 कुरिन्थियों पर दिया गया उपदेश है। यह सत्र 8, 2 कुरिन्थियों 7, अत्यावश्यक अपील है।